Special Issue January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

साहित्य और संस्कृति चिंतन

संपादक
प्रा.नवनाथ जगताप

सहसंपादक
डॉ.अनिल कांबळे

Scanned with CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

श्री विद्या विकास मंडल संचलित

श्री संत दामाजी महाविद्यालय, मंगलवेढा

(हिंदी विभाग)

एवं पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

के संयुक्त तत्त्वावधान में

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी

"साहित्य, समाज और संस्कृति"

खंड - २ साहित्य और संस्कृति चिंतन

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

Index

01) Higher Education in India: Prospects and Key Issues
Prof. Dr N.B. Pawar, Mangalwedha ||15

02) A Geographical Study of Major Tourist Places in Solapur District ...
Sawaisarje Pandhari Yallappa, Mangalwedha ||19

03) Spatial Analysis of Urbanization in Solapur District, Maharashtra
Khandekar M. S., Solapur (Mangalwedha) ||23

04) दोहरा अभिशाप : अधुभूति की अभिव्यक्ति
प्रा. संगीता विष्णु भोसले, सोलापुर ||29

05) आधुनिक भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य—प्रभाव
रमेश चन्द सैनी, कोटा ||32

06) समकालीन महिला कथा लेखन व चित्रा मुद्गल के सरोकार
डॉ. गणेश शंकर पाण्डेय, रायपुर ||35

07) मुस्लीम कवियों के काव्य में समन्वय की भावना ...
डॉ. हाशमबेग मिर्झा, जावेद खलिल पटेल, उस्मानाबाद ||39

08) चित्रा मुद्गल की कहानियों में कामकाजी—स्त्रियों की दिशा व दशा
डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा, रायपुर ||43

09) 'यादों के झरोखे' में अभिव्यक्त दलित जीवन
डॉ. साताप्पा शामराव सावंत, सांगली ||47

10) मराठी दलित आत्मकथाओं में शिक्षा संघर्ष
व्यंकट वा. धारासुरे, हैदराबाद ||50

11) असग़र वजाहत के कथा साहित्य में चित्रित वृद्धावस्था
प्रो. राघवेन्द्र. वी. मिस्किन, डॉ. जेड. ए. गुलगुन्डी ||53

12) हिन्दी उपन्यासों में चित्रित किन्नरों की व्यथा
डॉ. राजशेखर. उ. जाधव, रामदुर्ग ||54

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

25) दलित साहित्य का अर्थ, परिभाषा एवं अवधारणाएँ
डॉ. सुशील उपाध्याय, नीलम देवी, हरिद्वार ||95

26) अतीत से वर्तमान तक त्रासद स्थितियों से जुझते बस्तर की गाथा : आमचो बस्तर
डॉ संजय नाईनवाड, सोलापुर (बार्शी) ||99

27) हनुमान प्रसाद पोद्दार के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना
अनिता देवी, दिनेश चंद्र चमोला, बहादराबाद ||101

28) 'सात भाईयों के बीच चंपा' : एक विश्लेषण
प्रा. शैलजा पांडुरंग टिळे, इस्लामपुर ||104

29) नारी साहित्य
प्रा. व्ही. एच. वाघमारे, अक्कलकोट ||110

30) 'नाटक साहित्य की रंगमंचीय लोकधारा'
प्रा.डॉ. संजय व्यंकटराव जोशी, उस्मानाबाद ||112

31) भारत में सूफी संप्रदाय
डॉ. संजय धोटे, वर्धा ||114

32) शवयात्रा : दलित विमर्श
अंबादास विश्वनाथ कांबळे, सोलापुर ||117

33) हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श
स्वाती विष्णू चव्हाण, पुणे ||119

34) निर्मला पुतूल के साहित्य में आदिवासी जीवन-संघर्ष
बनगनर ज्ञानेश्वर किसन, पुणे ||121

35) हिंदी व्यंग साहित्य तथा नारी व्यंग लेखन
सौ. मानखेडकर बी. एस., चाकूर ||123

36) हिंदी साहित्य में व्यंग्य: स्वरूप और विकास
श्री. अंकुश जयवंत शेलार, सोलापुर ||125

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

26

अतीत से वर्तमान तक त्रासद स्थितियों से जुझते बस्तर की गाथा : आमचो बस्तर

डॉ संजय नाईनवाड
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
एस बी झाडबुके महाविद्यालय, बार्शी, जि. सोलापुर

राजीव रंजन प्रसाद द्वारा लिखित उपन्यास — 'आमचो बस्तर' यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली से सन २०१४ में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास बस्तर आंचल के अतीत और वर्तमान समयकाल की त्रासदियों को केंद्र में रख कर लिखा यथार्थवादी उपन्यास है। 'आमचो बस्तर बस्तर' — बस्तर के इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थनीति, भाषा, धर्म, कला, संस्कृति, संगीत, जीजिवीषा, परंपराएँ, लोक जीवन आदि तमाम रूपों से न पाठक को परिचित कराता है बल्कि पाठक को संवेदनाओं के स्तर पर गहरे रूप से जोड भी देता है। उपन्यास शुरूआत से लेकर अंत तक एक साथ दो धाराओं में बहता दिखाई देता है। एक ओर उपन्यास में जहाँ इतिहास की सम–विषम परिस्थितियों के आलोक में तत्कालीन आदिवासी जीवन को उजागर किया गया है तो दूसरी ओर स्वतंत्रता के बाद से लेकर वर्तमान तक की बस्तर निवासी आदिवासियों की त्रासदियाँ चित्रित हैं।

उपन्यास पढने के दौरान पाठक बस्तर की कई समस्याओं से जुड जाता है। डॉ कौशलेंद्र कांकेर के शब्दों में कहना हो तो — आमचो बस्तर अपनी ही धरती पर बेगानों के साथ मिल कर अपनों द्वारा क्रुताओं से छिछियाए हुए पीडित संसार का इतिहास है उपन्यास में रचनाकार ने आदिवासी इलाकें कई सालों से निर्मित माओवाद एवं नक्सलवाद जैसी ज्वलंत समस्या ने किस तरह अपना जाल फैलाया इस पर पर्याप्त प्रकश डाला है। इन दोनों समस्याओं ने किस तरह बस्तर में अशांति फैलायी है, इसकी ओर संजीदगी से पाठक और व्यवस्था का ध्यान आकर्षित करता है। और इसके विविध पहलुओं को उजागर किया है। उपन्यास को पढकर हम महसूस कर सकते हैं कि बस्तर में नक्सलवाद असल में स्थानीय उपज नहीं है बल्कि वह बाहर से आयातीत है। महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों से नक्सली आसरा पाने तथा सुरक्षा के लिहाज से बस्तर के अबुझ घने वनों एवं वनों में बसे गांवों में छीप जाते हैं। और यहां से अपनी नक्सली गतिधियां संचालित करते हैं। ये नक्सली अपने स्वार्थ के खातिर स्थानीय आदिवासी युवाओं के बरगलाकर अपराध की दुनिया से जोड देते हैं। यहीं नहीं नक्सलियों ने सदियों की आदिवासियों की गांव और मुखिया के अंतर्संबंधों पर पहार किया। हजारों सालों की मुखिया माझी व्यवस्था जो जनता के बीच का संवाद थी, उसे तोड दिया। नक्सलियों ने मुखियाओं को शोषक करा दिया और तथाकथित बराबरी का अधिकार उनकी जमीन और मवेशी की जुट और बाँट के साथ प्रारंभ हुआ। साथ ही नक्सलियों ने आदिवासियों में इस बात का प्रचार और प्रसार किया कि वे ही आदिवासियों के हितसंबंधी हैं। असल में वे ही आदिवासियों को लूटते हैं उनका शोषण करते हैं, जिसे उपन्यास में तल्खी से उभारा गया है। दुर्भाग्य की बात यह कि नक्सली दलों में बरगला कर स्थानीय आदिवासियों को भरती कराया जाता है और उन्हीं के हाथों से निरीह आदिवासियों पर अत्याचार किए जाते हैं, इसे भी हम उपन्यास में देख सकते हैं। उपन्यास को पढते समय पाठक भली भाँति समझ सकता है कि अतीत में बस्तर की सहज स्वाभाविक संस्कृति को बाहरी गैर आदिवासी समुदायों ने हस्तक्षेप करके विकृत करने का प्रयास हो रहा है। उपन्यास को पढते हुए हम महसूस कर सकते हैं कि अंग्रेजों के आगमन के साथ बाहरी लोग भी बडे पैमाने पर बस्तर मे आ कर बस गए। नतीजा बस्तर की संस्कृति, धर्म, लोक जीवन बडे पैमाने पर बाधित हो गया है।

वैसे देखा जाए तो बस्तर एक से एक प्राकृतिक संसाधनों एवं खनिज संपदाओं से अटा पडा है।

Scanned with CamScanner

बस्तर में क्या नहीं मिलता सब कुछ प्राप्त होता है। कारंडम, टिन, डाइमण्ड, बक्साईट, लाइमस्टोन, आयरन से लेकर युरेनियम तक किंतु बस्तर में इतना सब कुछ होने के बावजूद भी आज भी कंगाल है। चूंकि ये सारी संपदाएं बस्तर से निकल कर कथित विकास के नाम पर अन्य स्थानों पर निवेश किया जा रहा है। और बदले में बस्तर को क्या मिल रहा है, शोषण, उपेक्षा, गरीबी, बदहाली, प्रदुषण और बिमारियां आदि। उपन्यास को पढते समय इस पीडा को पाठक शिद्दत से महसूस करता है। आज भी बस्तर के अधिकांश गांवों में पक्की सडक की तो बात दूर कच्ची सडक तक नहीं पहूंच पायी है। कोई गांव में बीमार पडता है, और यदि उसे अस्तपताल ले जाना हो तो मरीज को बांस के सहारे खटिया को रस्सियों से बांधा जाता है जिसे दो व्यक्ति पालकी की तरह उठा कर ढोते हैं, यही बस्तर की एम्बुलेंस है, और ये एम्बुलन्स दुर्गम पहाडियों, कच्ची पथरीली पगडीडी से जिस तिस तरह अस्पताल पहूंचती है, यदि मरीज के जीवन की डोर लम्बी रही तो बचता है, वरना कहना मुश्किल होता है। ये हालात हैं बस्तर के, उपन्यास को पढते समय हम इसे भी महसूस कर सकते हैं। ये वही बस्तर है जो देश के विकास के लिए लौह आयस्क, कोयला, कोरंडम, लाइमस्टोन, बक्साईट, कोयला, युरेनियम आदि को पहुंचाता है। पर यहां न सडकें हैं, न बीजली है, न पानी हैं, न अस्पतालों की ढंग की सुविधाएं हैं, और न यहां के युवाओं को रोजगार। यहां लगी खदानों में बाहर के राज्यों से कामगार बुलाए जाते हैं, अधिकारी नियुक्त किए जाते हैं, पर स्थानीय बाशिंदों को रोज़गार नहीं मिल पाता, उपन्यास पढते समय पाठक इसे महसूस करता है। स्थानीयों को हीराकत भरी नजरें से देखा जाता है। उपन्यास पढते समय पाठक के मन में जो सवाल उठ खडे होते हैं, उनमें से एक सवाल उपन्यास में मुखर हुआ है उपन्यास के भीतर से एक कसक उठती है कि मेरे बस्तर! क्या तुम इसी प्रजातांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी लोकतंत्र का हिस्सा हो? क्या बस्तर भारत का ही हिस्सा है? आज देश को आजाद हुए लगभग ७२ वर्ष बीत चुके हैं। इसके बाद भी इस तरह की पीडा भरे सवाल भारतीय स्वतंत्रता एवं प्रयोजन के लिए चुनौती बन कर उभर आते हैं। यदि बस्तर स्वतंत्र भारत का हिस्सा है तो वहां विकास की धारा क्यों नहीं पहूंच रही है। क्या कारण हैं इसके? ऐसे कई सारे सवाल उपन्यास पढते समय मन में निर्मित होते हैं।

बस्तर के इलाके अबुझमाड और वहां के बाशिंदो को इरादतन आदिम संस्कृति और सभ्यता का संवर्धन के नाम पर विकास से कोसो दूर रखा जाता है, यह सरकार की नीति है। उपन्यास का एक पात्र शैलेष के कथन पर गौर किया जा सकता है। वह कहता है — सत्तर के दशक में एक कलेक्टर ने इन इलाकों में बनायी जा रही सडकों का यह कहते हुए विरोध किया कि इससे आदिवासी संस्कृति नष्ट हो जाएगी। ऐसे ही महाज्ञानियों के दबाव में आकर अबुझमाड को सरकार ने संरक्षित इलाका बना दिया है.....आज भी वहां जाना हो तो कलेक्टर से अनुमति लेनी पडती है। माडिया नंगे ही रहे और पत्थर युग की जिन्दगी जीते रहे। इस तरह की सरकार की नीतियां हैं तो आदिवासियों का विकास कब्से होगा? ये बडा सवाल है। जिसे उपन्यास में उठाया गया है।

उपन्यास में बस्तर इलाके के पीछडे पन पर भी प्रकाश डाला गया है। यहां के लोगों की मांग है कि बस्तर को शेष दुनिया से काट देने से बस्तर का विकास नहीं होगा। यहां परियोजनाएं आनी चाहिए, कल कारखाने लगने चाहिए। सरकारी नौकरी से केवल कुछ व्यक्तियों का जीवन सुधर सकता है परंतु यदि परियाजनाएं यहां लग जाए तो इसके चलते सहायक व्यापार और रोजगार भी जन्म लेते हैं। एक बात सही है कि यहां अंधाधूंध औद्योगिकरण नहीं होना चाहिए परंतु कुछ परियाजनाएं तो आनी चाहिए। जब कोई परियाजना शुरू होने की बात उठती है तब विरोध का स्वर ठोस होने लगता है उपन्यास का एक पात्र मरकाम कहता है — बस्तर में विकास और रोजगार की एक उम्मीद जगी नहीं कि हमारे मसीहां जहां तहां से पैदा हो जाते हैं.....इसलिए तो नक्सलवादी पनप रहे हैं.....विकास होगा नहीं, रोजगार रहेगा नहीं तो क्या होगा

उपन्यास में हम देख सकते हैं कि आदिवासियों

Scanned with CamScanner

को आदिवासियों के साथ ही लडा कर उन्हें मौत के घाट उतारने का षडयंत्र जारी है। इस समस्या को सलवा जुडूम जैसे अभियान के द्वारा २१ वीं सदी के पहले शतक में अंजाम दिया गया था। सलवा जुडूम क्या था इसका जवाब है — अपने ही इलाके के बाशिंदो को गृहयुद्ध की आग में धकेल देना था। कई लोगों का मानना था कि ये अभियान स्वयंस्फूर्त अभियान था, जिसमें आम आदिवासियों ने माओवादियों से त्रस्त होकर उनके खिलाफ हथियार उठाए थे। सलवा जुडूम में आगे चलकर सरकार ने समर्थन दिया। और मासूम आदिवासियों को सरकार माओवादियों तथा नक्सलियों के खिलाफ हथियार बनाकर लडाया। सलवा जुडूम में शामिल सदस्यों को सरकार ने विशेष पुलिस अधिकारी अर्थात एसपीओ के तौर पर भर्ती किया गया। और उन्हें सरकार की ओर से भत्ता दिया जाने लगा। यहां इस बात पर गौर किया जा सकता है कि मूलतः नक्सल और माओवाद समस्या बस्तर की अपनी नहीं थी। ये लोग बाहर से आकर बस्तर में आश्रय पाए थे। इन्होने स्थानीय आदिम निवासियों को डरा धमका कर, लालच देकर अपने गुट में शामिल कर लिया था। इस तरह से सलवा जुडूम में सरकार समर्थीत अभियान द्वारा आदिवासियों को आदिवासियों के खिलाफ ही लडा कर खून की होली खेली गई, इस पूरी प्रक्रिया को उपन्यास को पढने के दौरान हम पढ सकते हैं।

संदर्भ

राजीव रंजन प्रसाद, आमचो बस्तर, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २०१४

❑❑❑

27

हनुमान प्रसाद पोद्दार के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना

अनिता देवी
शोधार्थी, हिंदी विभाग, हिंदी एवं भाषा विज्ञान,
शोधस्थल — उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय,
बहादराबाद, हरिद्वार।

दिनेश चंद्र चमोला
शोधनिर्देशक

संस्कृति— भारतीय संस्कृति में रीतिरिवाज, परम्पराएँ, पर्व, जीवन यापन करने के तरीके, और जीवन के विभिन्न पक्षों का साहित्यक रूप होता है। संस्कृति शब्द को अंग्रेजी में 'कल्चर' शब्द से समबोधित किया जाता है। अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' लेटिन भाषा के 'कल्ट' या कल्टस से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है जोतना विकसित करना या परिष्कृत करना और पूजा करना। संस्कृति हमारे विचारों मूल्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई दिखाई पड़ता है। 'संस्कृति शब्द सम् उपसर्ग के साथ संस्कृत की (ऽ) कृ धातु से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ — परिष्कृत करना या साफ करना है'[९] एक राष्ट्र में रहने वाले मनुष्य आचार—विचार, कला, संगीत, साहित्य, धर्म, दर्शन विज्ञान सभी पक्ष संस्कृति के अंर्तगत आते हैं। संस्कृति में रीति रिवाज, परमपराएँ, त्यौहार आदि पक्ष भी व्यक्ति का अपना दृष्टिकोण सम्मिलित रहता है। संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रहती है। संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान तक एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में परिवर्तित होती रहती है उदाहरण के रूप में हमारे रहन—सहन में, अभिवादन में, वस्त्रों में, धार्मिक रीति रिवाजों व मान्यताओं में पश्चिमी संस्कृति से भिन्नता पाई जाती है। इस तरह कह सकते हैं कि किसी भी

Scanned with CamScanner